

मास्टर का मोह निवारण

उस गांव में एक मास्टर साहिब रहते थे । वे बड़े ही सन्त सेवी, वैराग्यवान् और ज्ञानयोग के साधक थे । उनका नव-जवान बेटा जो कि आज्ञाकारी और धर्मात्मा था, अचानक चल बसा । मास्टर साहब के हृदय पर यह चोट गहरी बैठी । आत्मसुख की स्थिति डावांडोल हो गयी । वे पागल-से-श्मशान और जंगलों की खाक छानने लगे । तांगेवाले से पूछते-‘मेरा बच्चा गाड़ी से तो नहीं उतरा ?’ घर वालों से भी ऐसे ही पूछते । उनकी हालत सुनकर श्रीस्वामीजी का हृदय दया से भर आया । श्रीस्वामीजी ने उनपर ऐसी कृपादृष्टि की-ऐसा सुख का स्थान बताया कि उनके दहकते हुए दिल में शान्ति और शीतलता का स्रोत खुल गया । मोह की आग बुझ गयी । ज्ञान की रूक्षता सरस हो गयी । प्रेमभक्ति की स्निग्धता से हृदय कोमल हो गया ।

श्रीस्वामीजी पर उनकी श्रद्धा अटल और गम्भीर थी । जिस पेड़ के नीचे श्रीस्वामीजी कभी बैठ गये, उसकी भी परिक्रमा करते थे । उनका पत्र पाकर नाचने लग जाते । बाजार में जाते हुए कहीं युगल सरकार का चित्र देख लेते तो जूता उतारकर साश्रु नेत्रों से वन्दना करने लगते । आगे जाने की याद न रहती । कभी-कभी तो कोई जूता ही उठा ले जाता । पेशाब करते करते ध्यान लग जाता, तो वहीं बैठ जाते । मिनटों का रास्ता घण्टों में तय करते । उनकी श्रद्धा भक्ति का औरों पर भी सुन्दर असर पड़ा । श्रीस्वामीजी भी

उनकी श्रद्धा और प्यास देखकर खुले दिल से गूढ़-गूढ़ बातें बताते । उनके पूछने का ढंग यह था-‘गरीब निवाज़ साहिब, इस गुलाम का यह अरज़ है, इत्यादि ।’

प्रश्न-स्वामीजी, कर्मी, ज्ञानी और भक्त में क्या भेद है ?

उत्तर-कर्मी तीन, ज्ञानी एक और भक्त दो । भक्त, जीव, ईश्वर । केवल ईश्वर । भक्त और ईश्वर ।

प्रश्न-कृपानिधान स्वामी, भक्त भेदभाव मानते हैं और श्रुति कहती है कि द्वैत में भय है । फिर तो भक्तों को भय बना ही रहेगा ।

उत्तर-वेद की वाणी सत्य है । जब तक द्वैत है तब तक आपस में प्रीति कैसे हो सकती है ? दोस्ती का अर्थ है ‘दो अस्ति, जिसमें दो हृदय एक हों । जब हृदय अद्वैत नहीं, तब प्रतीति (विश्वास) नहीं । प्रतीति नहीं तो प्रीति नहीं । प्रीति नहीं तो अशान्ति नहीं । श्रीगीता कहती है- अशान्त को सुख कहाँ ? यहाँ वेद शास्त्र का सिद्धान्त दिल एक करने का है । जैसे सेवक का स्वामी से, सखा का सखा से, पिता का पुत्र से, पत्नी का पति से, हृदय एक होना चाहिये वैसे ही अंश का अंशी से । प्रेम में द्वैत कहाँ ? प्रेम का स्वभाव ही है सारे परदों को हटाकर मिलाना । जैसे चौपड़ के खेल में युग न हो तो अकेला मारा जायेगा वैसे ही प्रेम में भी युग होना चाहिये । व्यक्ति दो हैं, परन्तु दिल एक है । दिल की एकता को ही अद्वैत कहते

हैं । श्रीगुरुसाहिब जी कहते हैं-

धन पिर एह न आखियहि जो बहनि इकट्ठे होय ।

एक जोति दो मूरती धन पिर कहिये सोय ॥

धन और प्यारे वह हैं जो एक ज्योति दो मूर्ति हैं ।

प्रश्न-प्यारे साईं, अधिक लोग भक्ति छोड़ कर ब्रह्मज्ञान के मार्ग में क्यों चलते हैं ?

उत्तर-जैसे चारों ओर फैला हुआ महान् प्रकाश सूर्य देवता की मूर्ति को छिपा देता है इसी प्रकार युगल सरकार का महान्-प्रकाश ही उनका आवरण बन जाता है । इसलिये लोग उन्हें देख नहीं पाते । संसार के दुःख से दुखित होकर जो मोक्ष रूप स्वार्थ चाहते हैं उनकी हिम्मत युगल सरकार के निकट जाने की नहीं होती । वे दुख निवृत्ति और सुख प्राप्ति के लिये व्यापक ब्रह्म का ध्यान करते हैं । भक्ति तो प्रभु की निज निधि, निज सम्पत्ति है । यह किसी को सुगमता से नहीं देते । क्योंकि यह दे देने से प्रभु को स्वयं उस प्रेमी के पीछे दास की तरह डोलना पड़ता है ।

प्रश्न-यह चंचल मन ईश्वर में कैसे लगे ?

उत्तर-मन को नियम में बाँधने से । किसी भी हालत में नियम नहीं तोड़ना चाहिये । सद्गुरु की आज्ञा के अनुसार नियम पालन करता रहे तो धीरे-धीरे मन को रस का चस्का लग जायेगा और सहज प्रेम का उदय होगा । यदि सर्वदा

नियम का निर्वाह करता रहे और बीच में कभी भूल भी हो जाय तो प्रभु सँभाल लेते हैं । एक बार कोई सेवक सन्त का दर्शन करने जा रहा था । रास्ते में एक अनोखा सा बटोही मिला । उसने पूछा-कहाँ जा रहे हो ?

सेवक-सन्त का दर्शन करने के लिए ।

पथिक-वे तो चल बसे ।

सेवक-उनके शरीर का दर्शन करूँगा ।

पथिक-उनका तो अग्नि संस्कार भी हो गया ।

सेवक-उनके फूलों का दर्शन करूँगा ।

पथिक-फूल भी गंगाजी में डाल दिये गये ।

सेवक-तो उनके स्थान का ही दर्शन करूँगा ।

सेवक ने स्थान पर आकर देखा तो सन्त सकुशल सानन्द विराजमान हैं । उसने सन्त से सारी बातें कहीं । सन्त ने कहा-ठीक है, ठीक ! वह पथिक और कोई नहीं भगवान् थे । उन्होंने मुझे चेतावनी दी हैं क्योंकि मैंने तीन घड़ी उनके भजन का नियम छोड़कर व्यवहार की बातें की । पहली घड़ी में मेरा मरण, दूसरी में अंतिम संस्कार और तीसरी में फूलों का गंगा में प्रवाह । प्रभु ने कृपा करके मुझे सँभाल लिया । सन्त प्रभु की कृपालुता का स्मरण करके भावमग्न हो गया ।

नियम के समय प्रेमदेव पदार्पण करते हैं । जब अपने समय को वे व्यवहार में लगता देखते हैं तो निराश होकर लौट जाते हैं नियम न पालना प्रेमदेव का अनादर है । इनका निरन्तर

इन्तज़ार और आदर करना चाहिये ।

प्रश्न- नाथ, भात में नमक डालते समय कौन बतलाता है कि इतना ठीक है ?

उत्तर-ईश्वर ।

प्रश्न-वह जीव के हृदय में किस प्रकार बैठा है ?

उत्तर-सर्व जीवों के अन्तर में भी अन्तर अन्तर्यामी जगदीश्वर विराजमान हैं जैसे अमावस्या के घोर अन्धकार में, बीहड़ जंगल में वृक्षों के नीचे काले पत्थर पर अत्यन्त सूक्ष्म सोने की चिड़िया चीं-चीं कर रही हो । सूक्ष्म होने से अविज्ञेय है एवं पंचकोष से दूर वह परमात्मा स्थित है । निकट से भी निकट है ।

प्रश्न-उसकी प्राप्ति कैसे हो ?

उत्तर-मन से वासना निकल जाय तो प्रभु दीख पड़े ।
घड़े से गेहूं निकाल लो तो आकाश ही नज़र आये ।

संकल्प सन्ध्या दूरि हो जाई ।

मध्य दिवस ईव रामगुसाई ॥

प्रश्न-प्रभु पर परदा क्या है ?

उत्तर-व्यापकता का । जब कोई भक्त पुकारता है तो घर्षण की अग्नि के समान प्रकट हो जाते हैं ।